Philosophy
Explore–Journal of Research for UG and PG Students
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

ईश्वरविहीन धर्मों में ईश्वर की अवधारणा

• कुमारी अभिलाषा • अन्नु कुमारी • राधा कुमारी
• कुमकुम रानी

Received : November 2012
Accepted : March 2013
Corresponding Author : Kumkum Rani

Abstract : २१वीं सदी विज्ञान और तकनीकी का युग है परन्तु आज भी धर्म और दर्शन को नकारा नहीं जा सकता। एक असीम सत्ता में विश्वास किए बिना भी नैतिक मूल्यों का पालन संभव है। इस शोध कार्य का उद्देश्य है कि लोग रूढ़िवादिता का त्याग कर नैतिक मूल्यों को महत्व दें। इस शोध कार्य में हमने वर्णनात्मक विधि विश्लेषणात्मक विधि तथा संश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया है। धर्म एक जटिल मनोवैज्ञानिक पद्धति है जिसके तीन पहलू हैं- ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक। अधिकांश धर्म ईश्वर की अवधारणा को स्वीकार करते है, परन्तु कुछ ऐसे भी धर्म है जहाँ ईश्वर को अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया गया है। जैसे- बौद्ध धर्म, जैन धर्म एवं मानवीय धर्म। भले ही इनके ईश्वर की अवधारणा ईश्वरवादी अवधारणा से भिन्न है। इन धर्मों ने पराशक्ति की अवधारणा को निर्वाण, बोद्धिसत्व, अर्हत आदि विभिन्न नामों से निर्दिष्ट किया है। इन धर्मों में नैतिक मूल्यों की श्रेष्ठता है। अतः इस शोध कार्य का निष्कर्ष है कि हम इस समाज में आदर्श मूल्यों की प्रतिस्थापना कर धार्मिक हिंसा को रोक सकते है।

Keywords: रूढ़िवादिता, ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक, पराशक्ति निर्वाण, बोद्धिसत्व, अर्हत्त, पंचरामेष्टि।

कुमारी अभिलाषा
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2010–2013), दर्शनशास्त्र (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

अन्नु कुमारी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2010–2013), दर्शनशास्त्र (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

राधा कुमारी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2010–2013), दर्शनशास्त्र (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

कुमकुम रानी
व्याख्याता, दर्शनशास्त्र विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : drkumkumranipatna@gmail.com

विषय परिचय:-

धर्म और दर्शन एक ही वस्तु के दो पहलू है। धर्म का उद्भव श्रद्धायुक्त भय और आश्चर्य से हुआ है, जबकि दर्शन की उत्पत्ति भी आश्चर्य से मानी गयी है।

प्रो० गैलवे के अनुसार ''धर्म वह है जिसमें अपने से परे किसी शक्ति के प्रति मानव श्रम के द्वारा अपनी संवेदनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति करके जीवन में स्थिरता प्राप्त करता है और जिस स्थिरता को वह उपासना और सेवा में अभिव्यक्त करता है।''

ऐतिहासिक सिंहावलोकन में ऐसे धर्म भी पाये गये हैं जिसमें ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया गया है यह धर्म अनीश्वरवादी धर्म कहलाते हैं।

1. अनीश्वरवाद का अर्थ एक ऐसे सिद्धान्त से है, जिसका सम्बन्ध ईश्वर से है – जो अनिवार्यत: निषेधात्मक सिद्धान्त है।'

ऐसे धर्म तीन माने गये हैं । ये तीन धर्म निम्नलिखित है :-

- जैन धर्म
- बौद्ध धर्म
- मानवीय धर्म

जैन दर्शन ईश्वरवाद का खंडन करता है। जैन दर्शन ईश्वर की सत्ता का खंडन करने हेतु कई युक्तियों का सहारा लेते हैं। जिन युक्तियों द्वारा ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध किया जाता है जैन उन युक्तियों की त्रुटियों की ओर संकेत करना आवश्यक समझता है। जैन ईश्वर के अस्तित्व की तरह उसके गुणों का भी खंडन करना है। इस प्रकार जैन धर्म ईश्वर का निषेध कर अनीश्वरवाद को अपनाता है।

बुद्ध ने भी ईश्वर की सत्ता का निषेध किया है । साधारणतया कहा जाता है कि विश्व ईश्वर की सृष्टि है और ईश्वर विश्व का स्रष्टा है। बुद्ध के मतानुसार यह संसार प्रतीत्यसमुत्पाद के नियमसे संचालित होता है। सारा विश्व उत्पत्ति और विनाश के नियम से शासित है। बुद्ध ने भी कई युक्तियों द्वारा ईश्वर के अस्तित्व को खंडित किया है । इस प्रकार विभिन्न रूप से बुद्ध ने अनीश्वरवाद को प्रामाणिकता दी है। बौद्ध धर्म पंचमहाव्रत के पालन की बात करता है।

2. बुद्ध ने अनीश्वरवाद से प्रभावित होकर अपने शिष्यों को ईश्वर पर निर्भर रहने का आदेश नहीं दिया। उन्होंने 'आत्म-दीपो भव' का उपदेश देकर शिष्यों को स्वयं प्रकाश खोजने का आदेश दिया । अनीश्वरवादी होने के बाद भी श्रेष्ठ नैतिक मूल्यों के कारण उन्हें धर्म की कोटि में रखा गया है।

मानवीय धर्म को मानने वालों में टैगोर का नाम सम्मानपूर्वक लिया जाता है। इनके अलावा Hellenism भी मानवीय धर्म को मानता है। इस धर्म में ईश्वर की व्याख्या मानवीय रूप में की जाती है । मानव की पूजा को ही ईश्वर की पूजा माना गया है। मानवीय धर्म विज्ञान से संगति रखता है। यह अधिदैविकता को प्रश्रय नहीं देता है। इसकी व्याख्या दो रूपों में की जा सकती है। पहली व्याख्या के अनुसार ईश्वर मानव रूप में उपस्थित होता है और दूसरी व्याख्या के अनुसार मानव को ईश्वर के रूप में व्यक्त किया जाता है।

इस धर्म में ईश्वर हीं नैतिकता का आधार है और मानवीय गुणों की समिष्टि है।

जैन धर्म, बौद्ध धर्म और मानवीय धर्म ईश्वरत्व की नवीन अवधारणा का प्रतिस्थापना करते हैं। अनीश्वरवादी होने के बाद भी इन तीनों धर्मों को धर्म की कोटि में रखा जाता है, सिर्फ इनके मूल्यों और आदर्शों के कारण।

ईश्वर विहीन धर्म मनुष्यों को स्वावलंबन की प्रेरणा देता है और मनुष्य के आंतरिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है और मानवीय धर्म द्वारा मानव की गरिमा को बढ़ाने का प्रयत्न उसे एक सुन्दर धर्म बना देता है।

उद्देश्य:-

- इस शोध कार्य का उद्देश्य है कि वर्तमन समय में लोग रूढ़िवादिता का त्याग कर नैतिक मूल्यों को महत्व दें।
- जैन, बौद्ध और मानववादी धर्म में ईश्वरत्व की नवीन अवधारणा का प्रतिस्थापना करना भी इस शोध कार्य का उद्देश्य है।

विधि:-

- वर्णनात्मक अथवा तथ्यात्मक विधि
- विश्लेषणात्मक विधि
- संश्लेषणात्मक विधि

प्राक्कल्पना :-

- यह संभावना है कि यदि हम आधुनिक युग में मूर्तिपूजा के स्थान पर आदर्श मूल्यों को स्थान दें तो ऐसा करना अधिक व्यवहारिक और लाभप्रद प्रतीत होता है।
- यदि हम ईश्वरविहीन धर्मों में ईश्वरत्व की व्याख्या आदर्श तथा मूल्यों के रूप में करते हैं, तो इससे धार्मिक हिंसा रोकी जा सकती है।

जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर जयदेव तथा अंतिम तीर्थंकर महावीर थे। जिन्होंने धर्म के क्षेत्र में सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चरित्र तीनों को आवश्यक माना है। जैन दर्शन के अनुसार ईश्वर को सर्वशक्तिमान कहना गलत होगा क्योंकि वह सभी वस्तुओं का मूल कारण नहीं है। जैन धर्म में पंचमहाव्रत की चर्चा की गयी है, जिसमें सत्य, अहिंसा अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य पालन करना परमावश्यक माना गया है।

इस प्रकार जैन अनीश्वरवादी है। यद्यपि सैद्धांतिक रूप से जैन धर्म ईश्वर का खण्डन करता है, परन्तु व्यवहारिक रूप से ईश्वर पर विचार करता है। वह ईश्वर के स्थान पर तीर्थंकरों को मानता है तथा उन्हीं की पूजा करता है। तीर्थंकर हीं जैन धर्म के ईश्वर हैं। जैन धर्म भी अन्य धर्मों की तरह किसी न किसी रूप में ईश्वर पर निर्भर करता है।

बौद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध हैं। उनके अनुसार यह संसार प्रतीत्यसमुत्पाद के नियम से संचालित होता है। नश्वर एवं परिवर्तनशील ईश्वर को ठहराना हास्यास्पद एवं असंगत है। बौद्ध धर्म में नैतिक मूल्य श्रेष्ठ हैं, जिसके कारण इन्हें धर्म स्वीकारा जाता है। बौद्ध धर्म का इतिहास इस बात का प्रमाण है कि आगे चलकर बुद्ध को ईश्वर के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। इसका कारण यह है कि अनीश्वरवादी धर्म मानव की धार्मिक भावना की संतुष्टि करने में असमर्थ है।

अतः जो धर्म अनीश्वरवादी प्रतीत होता है, वहाँ किसी न किसी रूप में ईश्वर का स्थान है।

मानवीय धर्म में ईश्वर, नैतिकता का आधार और मानवीय गुणों की समिष्टि है। यह धर्म मानव की आराधना में विश्वास करता है। इस धर्म के अनुसार मानव स्वयं भाग्य विधाता है। बौद्ध धर्म, टैगोर का दर्शन, हेलेनिज्म, प्रत्यक्षवाद इसके समर्थक हैं। मानवता के गुण जैसे–दया, परोपकार, सेवा इत्यादि की हीं पूजा होनी चाहिए। मानववाद का मानना है कि मनुष्य हीं पूजा का विषय है। अतः मनुष्य का कल्याण हीं हमारे जीवन का लक्ष्य है।

निष्कर्ष :

धर्म मानव की एक मनोदशा है जो उसके समस्त जीवन को प्रभावित करती है। विश्व के अधिकांश विकसित धर्म किसी न किसी रूप में एक प्रकार की अलौकिक सत्ता में विश्वास करते हैं। ईश्वरविहीन धर्म ऐसे माने जाते हैं जो ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं रखते परन्तु ऐसा मानना की ईश्वरविहीन धर्म पूर्ण रूप से ईश्वर की अवधारणा का खण्डन करते हैं, सही नहीं है। क्योंकि इन धर्मों में भी कहीं न कहीं एक अलौकिक सत्ता की अवधारणा है, परन्तु वह अवधारणा ईश्वरवादी अवधारणा से भिन्न है। इस पराशक्ति को इन धर्मों में निर्वाण, मोक्ष बोद्धिसत्व, अहर्त्त आदि विभिन्न नामों से निर्दिष्ट किया गया है।

ग्रंथ सूचि :

लाल बसन्त कुमार (1992), समकालीन भारतीय दर्शन, मोतीलाल बनारसी दास ।

डा० व्यास राम नारायण (1972), धर्म दर्शन, मध्य प्रदेश, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।

शर्मा डॉ० सुखदेव सिंह (1972), धर्म दर्शन, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना–3 ।

प्रो० सक्सेना लक्ष्मी (1977), समकालीन भारतीय दर्शन, उत्तर प्रदेश, हिन्दी संस्थान, लखनऊ।

सिन्हा डा० हरेन्द्र प्रसाद (1962), धर्म दर्शन की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसी दास, पेज नं० 7 ।

सिन्हा डा० हरेन्द्र प्रसाद (1990), भारतीय दर्शन की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसी दास, पेज नं० 125 ।